17-5-2001

याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा कार्य करने से यादगार बनते हैं

आज आप सबका याद-प्यार लेते हुए जब वतन में पहुँची, तो आज बाबा से नयन मुलाकात करते ऐसे लगा जैसे कहते हैं एक आंख में मुक्ति, एक आंख में जीवनमुक्ति तो उसी रीति से आज बाबा के नयनों से स्नेह और शक्ति इन दोनों की भासना आ रही थी। और इस स्थिति में जैसे खोये हुए थे। फिर बाबा बोले बच्ची क्या समाचार लेके आई हो! यह साज़ भरा आवाज़ ऐसा लगता था जैसे कहीं दूर-दूर से आ रहा हो। तो मैं बाबा को देखती ही रही, ऐसे लगता था जैसे जादूगर ने अपने स्नेह और शक्ति के जादू से अपनी ओर खींच रखा है। मैं बोल नहीं सकती थी, जैसे उसी स्थिति में स्थित थी। तो बाबा ने फिर कहा कि बच्ची क्या सन्देश लायी हो? मैंने कहा बाबा आपको सबने याद-प्यार दिया है और साथ ही साथ हमारे जगदीश भाई को भी दादी जी सहित सबने बहुत-बहुत याद-प्यार दिया है।

तो बाबा मुस्कराये और मैं चारों तरफ देखने लगी कि जगदीश भाई कहाँ है। तो बाबा ने कहा क्या देख रही हो बच्ची? मैंने कहा मैं जगदीश भाई को देख रही हूँ, वह दिखाई नहीं दे रहे हैं। तो बाबा ने कहा कि बच्ची आज सतगुरुवार है ना, तुम भोग किसके लिए लायी हो? तो मैंने कहा कि सतगुरु बाबा के लिए और बाबा फिर अपने बच्चों को भी खिलाता है। तो बाबा ने कहा कि पहले आप जिस कार्य के लिए आयी हो वह कार्य करो, तो मैने जैसे भोग स्वीकार कराने के लिए हाथ बढ़ाया तो बाबा मुस्कराये और बाबा ने कहा कि देखो बच्ची ४-५ दिन जगदीश बच्चा बाबा के वतन में रहा और जो बच्चे की इच्छा थी देखने की, जानने की, बाप के पास रहकर अव्यक्त वतन का अनुभव करने की...वह सब बाबा ने बच्चे की इच्छा पूरी की, सब अनुभव कराया, आज वतन से बच्चे की विदाई का दिन है।

तो बाबा बच्चे को तैयार कर रहा है तो जैसे ऐसे लगा कि बाबा आह्वान कर रहा है और कुछ ही सेकेण्ड के बाद मैं सामने देखती हूँ कि जगदीश भाई धीरे-धीरे आ रहे हैं। जब नज़दीक पहुँचे तो बहुत प्यार से बाबा से नयन मुलाकात करने के बाद जगदीश भाई ने मुझे देखा और बहुत प्यार से मुस्कराये। कहा आप आ गयी। मैंने कहा हाँ, आपको सबने बहुत-बहुत याद-प्यार दिया है। तो उन्होंने बाबा को देखा फिर मुझे देखा और मुस्कराया। तो बाबा ने कहा कि बच्चे मधुबन से आज भोग आया है, तो मेरे साथ-साथ आपको भी स्वीकार करना है। जगदीश भाई ज्ञानी तू आत्मा तो है ही, तो कहा कि पहले तो सतगुरु बाबा स्वीकार करेगा क्योंकि सतगुरुवार है और उसके बाद में आप फिर हमको खिलाइयेगा। तो बाबा ने कहा बच्चे इसमें तुम्हारा भी नाम लिखा हुआ है, तुम्हारी याद भी समाई हुई है तो कहा नहीं पहले आप। तो बाबा को हमने पहले भोग स्वीकार कराया फिर बाबा ने अपने हाथ से बड़े प्यार से जगदीश जी के मुख में गिट्टी खिलाई, अमृत पिलाया। जगदीश जी इतना प्रफुल्लित हो रहे थे, इतना गद्‌गद् हो रहे थे कि बार-बार यही बोले बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा.. आपने मुझे कितना बड़ा

सौभाग्य दिया और बाबा उनके सिर पर बहुत प्यार से हाथ फेर रहे थे। मैं दोनों का प्यार देख रही थी फिर मैंने कहा जगदीश जी आप ठीक हो! तो बोला बाबा के पास में तो कौन नहीं ठीक होगा, न ठीक होने वाले भी ठीक हो जाते हैं। और मैं तो बहुत-बहुत खुश हूँ कि बाबा ने मेरी सब इच्छायें पूरी कर दी।

पहले मैं सोचता था कि आप लोग कैसे वतन में जाते हो, वतन कैसा होगा। ज्ञान की बुद्धि से मैं वतन को इमर्ज करता था लेकिन आज मैं प्रैक्टिकल अनुभव कर रहा हूँ कि वतन में कैसी स्थिति होती है और वतन का अनुभव क्या होता है। वतन में बाबा के साथ में मिलन, बाबा की भासना, बाबा का प्यार और बाबा के साथ में जो मुझे रहने का इतना सुनहरा अवसर मिला, यह मेरे लिए सबसे मूल्यवान, सबसे भाग्यवान समय है जो बाबा ने मुझे सब अनुभव कराया। वैसे कहते थे जैसे एरोप्लेन से हम नीचे देखते हैं ऐसे ही वतन से नीचे देखते होंगे। लेकिन नहीं जब हम एरोप्लेन से नीचे देखते हैं तो नीचे बादल होते हैं और नीचे दिखाई भी देता तो पता नहीं चलता कौन है, क्या है, छोटे-छोटे जैसे गुड़ियों के घर होते हैं, ऐसे दिखाई देते हैं। लेकिन बाबा जो मुझे वतन से नीचे दिखाता है उसमें मैं सब कुछ इतना स्पष्ट देखता हूँ जैसे साकार वतन में कोई ऊपर छत से नीचे देखे तो सबके चेहरे भी दिखाई देंगे, क्या पहना है वह भी दिखाई देगा, क्या कर रहे हैं - वह भी दिखाई देगा तो बाबा के साथ मैंने वतन से जो कुछ भी देखा वह मैंने बहुत स्पष्ट देखा। जो मेरी दिल थी मैं यह-यह देखूँ, बाबा ने मुझे सब दिखाया भी और अनुभव भी कराया। बाबा ने मेरे को सब सेन्टर्स का भी चक्कर लगवाया। अमृतवेले का भी बच्चों का योग, बच्चों की स्थिति, रूहरूहान, बच्चे जो बाप के आगे अर्जी डालते थे, वह सब सीन बाबा ने मुझे दिखाये। रात का समय भी दिखलाया, कैसे सो रहे हैं, कैसे सुबह हो रही है, यह भी सब बाबा ने दिखलाया। और कैसे अण्डरग्राउण्ड यह परीक्षण करते हैं, कैसे ऊपर जा रहे हैं। तो ऊपर का, नीचे का सब अनुभव बाबा ने मुझे कराया। सर्व प्रकार के ज्ञान का अनुभवी बना दिया। बाबा ने मुझे इतना स्नेह दिया, इतनी शक्ति भरी है जो लगता है कि बाबा मुझे जैसे फिर से इतनी श्रेष्ठ,

इतनी ऊंची सेवा के लिए तैयार कर रहा है। जैसे कोई परीक्षा में जाता है तो तैयारी कराते हैं ना, तो बाबा भी मुझे ऊंची परीक्षा में, ऊंची सेवा में भेजने के लिए मुझे तैयार कर रहा है।

और आज बाबा ने मुझे इशारा दिया कि बच्चे अभी तुम बाबा के पास में रहे, सबकुछ अनुभव किया, अब तुमको सेवा के निमित्त जाना है। तो बाबा मुझे जहाँ भेजेगा मैं तो एवररेडी हूँ। बाबा ने हर प्रकार से मेरे को एवररेडी बना दिया है। तो आज मैं इस वतन से अपने साथियों से विदाई ले रहा हूँ। तो साकार वतन निवासी मेरे सभी भाई-बहनों को मेरी बहुत-बहुत याद-प्यार देना कि आप सबने मेरे को बहुत प्यार दिया, स्नेह दिया, सेवा की.. जहाँ-जहाँ भी मैं बीमारी के कारण गया, निमित्त बीमारी थी लेकिन मैं समझता था कि यह बीमारी-बीमारी नहीं है लेकिन बाबा मुझ से बेहद की सेवा करा रहा है। तो मैंने शरीर को नहीं देखा लेकिन मैं जहाँ भी गया, सेवा ही करता रहा और मैंने अपनी सेवा का यादगार सभी स्थानों पर छोड़ा। और सबने मुझे प्यार दिया, चाहे वह लण्डन हो, बाम्बे हो, अहमदाबाद वाले हों, हास्पिटल वाले हो और दिल्ली शक्तिनगर, डेरावाल, दिल्ली की जितने भी सेन्टर्स हैं, सभी भाई-बहनों को मेरी याद-प्यार देना और साथ-साथ विशेष दिल्ली के डा. गुप्ता जी, परिवार को बहुत याद दी कहा इन्होंने मेरी बहुत बड़े प्यार और लगन से सेवा की है। मधुबन निवासियों को तो मैं क्या कहूँ, सबकी शुभ भावनायें मुझे सदा उमंग-उत्साह देती रही, सदा मुझे आगे बढ़ाती रही और सदा मेरे अन्दर शक्ति पैदा करती रही और कैसे मैं इतना दिन वहाँ रहा, कैसे समय निकल गया, पता ही नहीं चला। तो मैं सेवा का रिटर्न क्या दूँ और कैसे दूँ, मेरी शुभ कामनायें सदा सबके साथ हैं। और साथ-ही-साथ उन्होंने कहा कि सोनीपत में जो सहयोगी-स्नेही पंजाब-हरियाणा के भाई-बहनें हैं, जिन्होंने इतना सहयोग दिया, मेरी बात को सुना, समझा और यथा शक्ति करने की कोशिश की है, उन सबको मेरा बहुत-बहुत याद-प्यार देना। मैंने कहा कि जगदीश भाई आज तो आपने याद-प्यार का भण्डारा खोल दिया।

तो बोले बात यह है कि मैं अब इन सबसे विदाई ले रहा हूँ ना तो एक-एक करके मेरी आँखों के सामने सबकी तस्वीरें आ रही हैं और मैं कैसे सबके स्नेह का रिटर्न करूँ, यह मेरी समझ में नहीं आता है लेकिन मेरे अन्दर उनकी याद है इसीलिए मेरे अन्दर से उनके प्रति याद-प्यार निकल रहा है।

फिर बोला कि अब तो मैं निश्चिंत हूँ, मेरे को और कोई इच्छा नहीं है। बाबा बैठा है, दादी बैठी है, गुलजार दादी बैठी है सारे भाई-बहिन बैठे हैं, जो कुछ करेंगे वह अच्छे के लिए करेंगे और उन सब बातों में सफलता मिलेगी, इसलिए मैं तो निश्चिंत हूँ कि जो कल्प पहले हुआ था वही होगा और वही हो रहा है। सोनीपत की जमीन के लिए कहा कि जो मेरे विचार थे, जो मेरी दिल थी, जो मेरे संकल्प थे वह मैने सब कह दिये। मेरे अन्दर ऐसा नहीं है कि यह रह गया, वह रह गया, मैंने अपने सब संकल्प पूरे कर दिये, अब मेरे अन्दर कुछ रहा नहीं। तो जैसे वह अपने मन की भावनायें बोले जा रहे थे। फिर उसके बाद बाबा ने कहा कि बच्चे तुम्हारे अन्दर जैसे बहुत ज्ञान भरा है, ऐसे सब आत्माओं के प्रति शुभ भावना और शुभ कामनायें भी भरी पड़ी है। सभी आपके संस्मरण सुनाते रहते हैं। तो बाबा ने कहा कि जो याद में रहकर, याद और सेवा का बैलेन्स रखकर कोई भी कार्य करते हैं उसका यादगार बन जाता है। तो आप अपना यादगार छोड़कर आये हैं, जो आपको सब किसी ना किसी रीति से याद करते रहेंगे।

फिर जगदीश भाई ने कहा कि जिसका नाम न लिया हो उसको भी मेरी याद-प्यार स्वीकार हो और दादी जानकी को बहुत याद-प्यार दिया कहा कि दादी जानकी की शुभ भावनायें सूक्ष्म में मिलती रहती हैं, उनको रिटर्न में मेरा बहुत याद-प्यार देना। सभी हमारे मुख्य भाइयों, मुख्य बहनों को, सभी मीटिंग वालों को सबको बहुत याद-प्यार देना और ऐसे याद-प्यार देते उन्होंने बाबा के तरफ देखा तो बाबा जैसे उनको बहुत प्यार से दृष्टि दे रहे थे। देते-देते-देते जैसे जगदीश जी सूक्ष्म-सूक्ष्म-सूक्ष्म बनते-बनते एकदम बिन्दु बन जैसे एक लाइट में समा गये। और बाबा ऐसे ही उनको लास्ट तक

देखता रहा। उस समय बहुत गहरी शान्ति का अनुभव हो रहा था, फिर बाबा ने उसी शान्ति में मेरे को दृष्टि देते इधर भेज दिया। ओम् शान्ति।